दिनांक :- 20-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- बारह

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन की प्रगति (1900-1931 ई०)

(29) कृषि - चीनी अर्थव्यवस्था के मेरुदंड थी। देश की सत्तर प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई थी। गाँव में रहनेवाले किसान, पश्चिमी संपर्कों, विद्रोहों तथा क्रांतियों से बहुत कम प्रभावित थे। वे मुख्य धारा से कटे हुए थे। किसान खेतों में हल-बैल से खेती करते थे। बैल और गदहे हल खींचते थे। फसल की कटाई और दौनी के

Scanned with CamScanner

पुराने तरीके थे। पश्चिमी देशों के कृषि उपकरणों के बारे में न सुना गया था और न इसका इस्तेमाल किया गया था। कृषि का यांत्रिकीकरण न हुआ था। इस के और कई कारण थे। प्रथम: चीन छोटे-छोटे थे तथा बिखरे हुए थे। वहाँ ट्रैक्टर का इस्तेमाल संभव नहीं था। चीनी किसान भूमि की चकबंदी (Consolidation of holdings) के लाभों से भी अपरिचित थे। द्वितीय पश्चिमी कृषि उपकरण एवं यंत्र बड़े महंगे थे। निर्धन चीनी किसान उन्हें नहीं खरीद सकते थे। कृषि के यंत्रिकीकरण का एक लाभ तो अवश्य था कि इससे मजदूरों की बचत होती। लेकिन चीन में मजदूरों का बाहुल्य था। अतः वहाँ कृषि के यंत्रिकीकरण का विरोध भी हो रहा था क्योंकि इससे बेकारी बढ़ने की संभावना थी। यद्यपि कृषि में नए उपकरणों का इस्तेमाल नहीं किया गया तथापि कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ।

इसके कई कारण थे। प्रथम, यातायात के साधनों का उन्नत करने से किसानों को बड़े लाभ हुए। अब खाद्यान्न की जगह वाणिज्य फसलों के उत्पादन पर ध्यान दिया जाने लगा। इनका विश्वव्यापी बाजार था। द्वितीय मशीन की उपयोगिता के महत्व को स्वीकार किए जाने लगा था। लोग यह समझ रहे थे कि हस्तशिल्प महंगा है तथा कल-कारखानों के उत्पादन सस्ते हैं। तृतीय बाजार के जिस शहर, शहरी शिल्पी वर्ग का विकास तथा विशेष हस्तशिल्प उत्पादन मालों के अन्तर्विनियम एक सूचक था। अभी तक तो यह स्थानीय था, लेकिन अब इसका बाजार विस्तृत होने लगा। अपनी आवश्यकताओं के पूर्ति के लिए किसान बाजार पर आश्रित रहने लगे। अब वे स्थानीय के लिए नहीं बल्कि विस्तृत बाजार के लिए वस्तुओं का उत्पादन करने लगे। मंचूरिया में सोयाबीन, चीहली और कियाँ ग्सु में कपास तथा प्रायः प्रत्येक प्रांत के तंबाकू

का उत्पादन किया जाने लगा। सैनिक शासन काल में अफीम का उत्पादन भी बढ़ गया। इस तरह कृषि उत्पादन में विशिष्टता बढ़ गई। कुछ किसान खाद्यान्न कुछ तेलहन तथा कुछ वाणिज्य फसलों के उत्पादन में जुट गए। कुछ फसलों का निर्यात तथा कुछ का आयात भी किया जाने लगा।

कच्चे माल के उत्पादन पर ध्यान दिया गया। इसके लिए सरकार भी चौकस थी तथा व्यक्तिगत एंव सामूहिक तौर से भी प्रयास किया जा रहा था। चीन में अमरीकी कपास के उत्पादन पर ध्यान दिया गया। साथ ही, देशी ढंग से भी कपास का उत्पादन किया जाने लगा। नानकिंग विश्वविद्यालय के कृषि विभाग में एक अमरीकी कपास विशेषज्ञ के लिए उत्तम रेशम के रूग्ण कीड़ो को हटाने के लिए भी कदम उठाए गए। निर्यात के लिए उत्तम रेशम का उत्पादन किया जाने लगा। चाय के साथ भी यही बात लागू होता है। विद्यालयो तथा महाविद्यालयो के कृषि विभागो

मे शोध कार्य चल रहे थे! उत्तम बीज के संग्रह तथा उपयोग

के तरीके, लाभ आदि के बारे में बतलाया। फसल की चक्रा

नुक्रम पद्दति (Rotation of crops) के बारे में बतलाया

गया। 1913 ई० मे कृत्रिम खाद का कम उपयोग होता था

जबकि 1923 ई० मे चार के साथ भी यही बात लागू होती है

यह नही कहा जा सकता कि 1930 ई० मे चीनी किसान की

हालत में काफी सुधार आ गया था। 1930 ई० मे बाढ़, सुखाड़

दुर्भिक्ष इत्यादि के कारण किसानों की दुर्दशा बढ़ गई थी। किंतु

सामान्य काल मे किसानों की स्थिति मे सुधार हो रहा था।

किसान तंबाकू, खाद, अन्य विलासमय वस्तुओं का आयात और

उपयोग करने लगे। रेलगाड़ी तृतीय श्रेणी मे वे यात्रा करने

लगे जिससे राजस्व बढ़ गया किंतु दूर-दराज मे रहने

वाले किसानों की हालत खराब थी

ग्रामीण उद्योग धन्धे भी थे। सूत की कताई-बुनाई प्राचीन

काल से चली आ रही थी ग्रामीण अर्थ व्यवस्था की यह नींव थी इससे बच्चे-स्त्री-पुरुष सब के सब लगे हुए थे। घरेलू आवश्यकता की पूर्ति के बाद इसे बाजार में भी भेजा जाता था।
औद्योगिक क्रांति की आगमन के बावजूद घरेलू उद्योग-धन्धे जीवित रहे। लेकिन यहाँ भी परिवर्तन देखा जा सकता है। चिहली और कियाँगस्सु प्रांतो में कपास का उत्पादन होता था। वहाँ के साहूकार प्रभावशाली बन गए। वे किसानो को चरखे या करघे, कच्चा कपास या सूत देते थे। पुनः वे उनसे सूत या कपड़े लेकर बाजार भेज देते थे। इसके उत्पादक को केवल पारिश्रमिक मिलता था। इस प्रकार बाजार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए वृहत् पैमाने पर उत्पादन किया जाने लगा जहाँ आधुनिक संयंत्र लगे हुए थे। वस्त्र रेशम-कागज इत्यादि उद्योगों में इसका इस्तेमाल किया जाने लगा। चीनान (Chienan) का कागज उद्योग मशहूर था। यह दो सौ प्रतिशत मुनाफा कमा रहा था। 1947ई० में कागज के इक्कीस कारखाने थे।

(ग) औद्योगिक विकास :- 19वी शताब्दी में चीन के नगरों तथा शहरों में गृह उद्योग धन्धो का जाल फैला हुआ था कुछ अपवादों को छोड़कर स्थानीय बाजार के लिए ही उत्पादन किया जाता था। दुकान और कारखाना में कोई अंतर नही था। उत्पादन के साधन सीमित थे। उपकरण सरल थे तथा परिवार के सब लोग मिल-जुलकर उत्पादन कार्य में लगे हुए थे श्रम विभाजन व पूँजी की कोई विशेष आवश्यकता न थी। शिल्पी विभिन्न हस्तकारियों में लगे हुए थे। उनकी अलग अलग श्रेणियाँ बनी हुई थी। श्रेणियाँ मूल्य गुणवत्ता मजदूरी प्रशिक्षुओं की शर्तों इत्यादि का निर्धारण करती थी।

इसमें कोई संदेह नही कि 1930 ई० तक चीन में उत्पादन की पुरानी विधियाँ श्रेणियाँ आदि प्रचलित थी। किंतु अब उत्पादन की प्रक्रिया में परिवर्तन के चिन्ह भी दिखाई दे रहे थे सूती तथा रेशम उद्योगों में हथकरघे भी काम कर रहे थे।